Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

विशाल कुमार* डॉ. संजीव कुमार**

* एम0 एड0 (छात्र) (शिक्षा) हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद (एम.जे.पी.आर.यू, बरेली) (उ.प्र.) भारत
** असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा) हिंदू कॉलेज, मुरादाबाद (एम.जे.पी.आर.यू, बरेली) (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जीवन के उस संक्रमणकाल में होते हैं जहाँ शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक परिवर्तन तीव्रता से होते हैं, ऐसे में विद्यालय का वातावरण उनके व्यक्तित्व विकास एवं समायोजन क्षमता को गहराई से प्रभावित करता है। प्रस्तुत शोध मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में संपन्न किया गया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में कुल 120 विद्यार्थियों (60 सह-शिक्षा तथा 60 पृथक विद्यालयों से) को शामिल किया गया। डेटा संग्रह हेतु स्वयं निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध की प्रकृति सर्वे शोध की है। शोध निष्कर्ष में विद्यालय के प्रकार का विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता तथा व्यक्तित्व गुणों पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ता है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास और समायोजन क्षमता का निर्माण विद्यालय के प्रकार से अधिक उनके पारिवारिक वातावरण, अनुभवों एवं शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है।
शब्द कुंजी – सह-शिक्षा, पृथक विद्यालय, समायोजन क्षमता, व्यक्तित्व गुण।

प्रस्तावना – शिक्षा मानव जीवन का अभिन्न अंग है जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम बनती है। विद्यालय न केवल ज्ञानार्जन का केंद्र है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक समायोजन तथा मानसिक परिपक्वता का भी प्रमुख स्थान है। माध्यमिक स्तर पर छात्र अपने जीवन के उस महत्वपूर्ण चरण में होते हैं, जहाँ उनका शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है। इसी समय उनकी व्यक्तित्व संरचना एवं समायोजन क्षमता का निर्माण होता है। इस दृष्टि से विद्यालय का वातावरण, शिक्षण पद्धति तथा सहपाठियों के साथ अंत:क्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालयों के दो प्रमुख प्रकार होते हैं-सह-शिक्षा और पृथक विद्यालय। सह-शिक्षा में बालक एवं बालिकाएँ एक साथ अध्ययन करते हैं, जबकि पृथक विद्यालयों में दोनों के लिए अलग-अलग शिक्षण संस्थान होते हैं। दोनों ही व्यवस्थाओं के अपने-अपने शैक्षिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव होते हैं। सह-शिक्षा में विद्यार्थी विपरीत लिंग के साथ संवाद एवं सहयोग करना सीखते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास, सहनशीलता, सहयोग, एवं सामाजिक समरसता जैसे गुणों का विकास होता है। वहीं, पृथक विद्यालयों में विद्यार्थियों को अपनी ही लिंग-समूह के बीच खुलकर विचार व्यक्त करने का अवसर मिलता है, जिससे आत्म-अभिव्यक्ति और प्रतिस्पर्धात्मक भावना विकसित होती है।समायोजन क्षमता व्यक्ति का अपने परिवेश, सामाजिक परिस्थितियों तथा विद्यालयीन वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने की योग्यता है। एक सुव्यवस्थित समायोजन व्यक्ति को मानसिक संतुलन, सामाजिक स्वीकार्यता और आत्मसंतोष प्रदान करता है। इसी प्रकार व्यक्तित्व गुण व्यक्ति के व्यवहार, सोच, दृष्टिकोण एवं सामाजिक सहभागिता को निर्धारित करते हैं। विद्यालय के वातावरण, शिक्षक-शिष्य संबंधों, सहपाठियों के व्यवहार तथा लिंग-आधारित अनुभवों से इन गुणों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में विद्यार्थियों की सफलता केवल शैक्षणिक उपलब्धियों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उनके समायोजन कौशल, आत्मविश्वास, संप्रेषण क्षमता और व्यक्तित्व संतुलन पर भी निर्भर करती है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि यह अध्ययन किया जाए कि सह-शिक्षा और पृथक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुणों में क्या अंतर या समानता पाई जाती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व- विद्यालय वह स्थान है जहाँ बच्चे अपने व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, सामाजिक व्यवहार सीखते हैं तथा जीवन के प्रति दृष्टिकोण विकसित करते हैं। इस संदर्भ में सह-शिक्षा और पृथक विद्यालय की व्यवस्था विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण एवं समायोजन क्षमता पर गहरा प्रभाव डालती है।

सह-शिक्षा में लड़के और लड़कियाँ एक ही वातावरण में अध्ययन करते हैं, जिससे उनमें परस्पर समझ, सहनशीलता, सहयोग और समानता की भावना विकसित होती है। इससे समाज में लैंगिक समानता और सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है। वहीं दूसरी ओर, पृथक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों को एक सुरक्षित, प्रतिस्पर्धी और लिंग-विशिष्ट वातावरण मिलता है, जहाँ वे अपनी रुचियों और क्षमताओं को बिना किसी सामाजिक दबाव के विकसित कर सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि यह अध्ययन किया जाए कि कौन-सा शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता और व्यक्तित्व गुणों के विकास में अधिक प्रभावी है।

इसी के दृष्टिगत शोधार्थी द्वारा इस विषय पर अध्ययन करने का निश्चय किया गया वर्तमान परिस्थितियों में यह शोध विषय न केवल शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी होगा, बल्कि सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और

नीतिगत दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए सबसे उपयुक्त शैक्षिक प्रणाली की पहचान करने में सहायक सिद्ध होगा। इसी तथ्य के दृष्टिगत शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध के माध्यम से माध्यमिक स्तर पर सह-शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुणों के बीच तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

समस्या कथन- 'सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन'।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता का अध्ययन करना।
2. सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों के बारे में अध्ययन करना।
3. सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं :

1. सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयो की छात्राओं की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि- समस्या का चयन होने के बाद यह निश्चित करना आवश्यक है कि एक शोध के समाधान के लिए कौन सी विधि प्रयुक्त होगी इसके निर्माण के अभाव में कोई भी शोध कार्य संभव नहीं हो पता है प्रस्तुत शोध की प्रकृति विवरणात्मक शोध की है प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वे विधि का चयन किया गया है जो विधिवत है।

अत: शोधार्थी द्वारा सर्वे पद्धति का प्रयोग किसी निश्चित क्षेत्र में व निश्चित तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

जनसंख्या- शोध में जनसंख्या शब्दों का अर्थ भिन्न होता है। जनसंख्या का तात्पर्य संपूर्ण इकाइयों के निरीक्षण से होता है। शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है और वह सजातीय होते हैं।

शोध क्षेत्र-प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य का मुरादाबाद जनपद है। मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर यह शोध किया गया है। अत: प्रस्तुत शोध में मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 एवं कक्षा 10 के छात्र-छात्राएं जनसंख्या के रूप में सम्मिलित हैं।

न्यादर्श- किसी भी अनुसंधान कार्य में संपूर्ण व्यक्ति समूह को अध्ययन में सम्मिलित करना अत्यंत कठिन होता है, इसलिए अनुसंधानकर्ता समूह के कुछ ही सदस्यों को चुनकर उन्हीं की जानकारी को संपूर्ण समूह के लिए उचित समझता है इस प्रकार यह प्रतिनिधित्व समूह ही न्यादर्श कहलाता है। प्रस्तुत शोध में मुरादाबाद जनपद के शहरी क्षेत्र के 6 माध्यमिक विद्यालयों से 120 छात्र-छात्राओं का न्यादर्श में चयन किया गया। जिनमें से 60 छात्र एवं 60 छात्राएं थी। कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया 60 छात्र/छात्राऐं सह-शिक्षा विद्यालयों से एवं 60 छात्र/छात्राऐं पृथक विद्यालयों सेचयनित किये गये हैं। न्यादर्श के चयन के लिए चयन हेतु सरल यादृच्छिक नमूना विधि का प्रयोग किया गया।

शोध उपकरण- प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा स्वयं निर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया किया गया है। शोधार्थी ने शोध कार्य के उद्देश्य को ध्यान में रखकर स्वयं निर्मित प्रश्नावली मापन उपकरण का प्रयोग किया है।

प्रदत्तो का सांख्यिकीय विश्लेषण

परिकल्पना 01- 'सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'

तालिका संख्या 4.1-सह-शिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की समायोजन क्षमता का सांख्यिकीय विश्लेषण।

विद्यालय का प्रकार	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य	निष्कर्ष
सहशिक्षा विद्यालय	30	75	10	1.05	0.05
पृथक विद्यालय	30	72	12		पर सार्थक

उपर्युक्त तालिका 4.1 के अवलोकन से ज्ञात हो रहा है कि सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की समायोजन क्षमता के संदर्भ में मध्यमान 75 तथा मानक विचलन 10 है जबकि पृथक विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान 72 तथा मानक विचलन 12 है। समायोजन क्षमता के संदर्भ में सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.96 है जबकि 'टी' का परिगणित मान 1.05 है जोकि सारणी मान 1.96 से कम है तथा 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है अत: शोधार्थी द्वारा बनाई गई परिकल्पना 01 स्वीकृत की जाती है अत: कह सकते है कि सह-शिक्षा तथा पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की समायोजन क्षमता में कोई अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 02- 'सहशिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'

तालिका संख्या 4.2-सहशिक्षाएवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की समायोजन क्षमता का सांख्यिकीय विश्लेषण।

विद्यालय का प्रकार	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य	निष्कर्ष
सहशिक्षा विद्यालय	30	65	10	0.816	0.05 पर
पृथक विद्यालय	30	63	09		सार्थक

उपर्युक्त तालिका 4.2 के अवलोकन से ज्ञात हो रहा है कि सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता के संदर्भ में मध्यमान 65 तथा मानक विचलन 10 है जबकि पृथक विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं का मध्यमान 63 तथा मानक विचलन 09 है। समायोजन क्षमता के संदर्भ में सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.96 है जबकि 'टी' का परिगणित मान 0.816 है जोकि सारणी मान 1.96 से कम है तथा 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है अत: शोधार्थी द्वारा बनाई गई परिकल्पना 02 स्वीकृत की जाती है अत: कह सकते है, कि सहशिक्षा तथा पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं की समायोजन क्षमता में कोई अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 03- 'सहशिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के

व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'

तालिका संख्या 4.3– सहशिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व गुणों का सांख्यिकीय विश्लेषण।

विद्यालय का प्रकार	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	निष्कर्ष
सहशिक्षा विद्यालय	30	80	11	0.968	0.05 पर
पृथक विद्यालय	30	77	13		सार्थक

उपर्युक्त तालिका 4.3 के अवलोकन से ज्ञात हो रहा है कि सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के व्यक्तित्व गुणों के संदर्भ में मध्यमान 80 तथा मानक विचलन 11 है जबकि पृथक विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान 77 तथा मानक विचलन 13 है। व्यक्तित्व गुणों के संदर्भ में सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.96 है जबकि 'टी' का परिगणित मान 0.968 है जोकि सारणी मान 1.96 से कम है तथा 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है अत: शोधार्थी द्वारा बनाई गई परिकल्पना 03 स्वीकृत की जाती है अत: कह सकते है कि सहशिक्षा तथा पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में कोई अन्तर नहीं है।

परिकल्पना 04–'सहशिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'

तालिका संख्या 4.4– सहशिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों का सांख्यिकीय विश्लेषण।

विद्यालय का प्रकार	छात्रों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	निष्कर्ष
सहशिक्षा विद्यालय	30	75	10	0.368	0.05 पर
पृथक विद्यालय	30	74	11		सार्थक

उपर्युक्त तालिका 4.4 के अवलोकन से ज्ञात हो रहा है कि सहशिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों के संदर्भ में मध्यमान 75 तथा मानक विचलन 10 है जबकि पृथक विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान 74 तथा मानक विचलन 11 है। व्यक्तित्व गुणों के संदर्भ में सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.96 है जबकि 'टी' का परिगणित मान 0.368 है जोकि सारणी मान 1.96 से कम है तथा 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अत: शोधार्थी द्वारा बनाई गई परिकल्पना 04 स्वीकृत की जाती है अत: कह सकते है कि सहशिक्षा तथा पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में कोई अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय के प्रकार चाहे वह सहशिक्षा हो या पृथक माध्यमिक विद्यालय का विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता तथा व्यक्तित्व गुणों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है। दोनों प्रकार के विद्यालयों के छात्र एवं छात्राएँ समान रूप से अपने परिवेश, शिक्षकों, सहपाठियों तथा शैक्षणिक गतिविधियों के साथ अनुकूलन करने में सक्षम पाए गए हैं। साथ ही उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों जैसे आत्मविश्वास, सामाजिकता, भावनात्मक संतुलन एवं उत्तरदायित्व बोध में भी उल्लेखनीय अंतर नहीं पाया गया। अत: यह कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व विकास एवं समायोजन क्षमता का निर्माण विद्यालय के प्रकार से अधिक उनके पारिवारिक वातावरण, व्यक्तिगत अनुभवों एवं शिक्षण–प्रशिक्षण की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। इस प्रकार, सहशिक्षा एवं पृथक माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में किसी प्रकार की असमानता परिलक्षित नहीं होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. चौधरी, एस. (2019). सहशिक्षा का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण. लखनऊ: यूनिवर्सल बुक एजेंसी।
2. गुप्ता, एन. एल. (2017). व्यक्तित्व विकास और शिक्षा. नई दिल्ली: शारदा पब्लिशिंग हाउस।
3. राव नारायण (1964). विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धियां के मध्य संबंध का अध्ययन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. परमेश्वर (1952). किशोर और वयस्को की समायोजन क्षमता का अध्ययन, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
5. चौहान, एस. एस. (2018). अभिवृत्ति एवं व्यक्तित्व विकास. नई दिल्ली: वंदना पब्लिकेशन।
6. पाठक, योगेश कुमार : मेन्टल हेल्थ एण्ड सोशियल एडजस्टमेंट एमोग कॉलेज स्टूडेंटस, आर्टकल आई. डी. –004, गवर्मेंट आर्ट कालेज, राजकोट, गुजरात।
7. सालोमन, आर.सी. (2006). सिंग्ल सेक्स प्रोग्रामस: रिसोलविंग द रिसर्च कन्ड्रीम टीचरस कॉलेज रिकार्ड, 108 (4), 778 – 802।
8. मिश्रा, कुमार सुधीर एवं मिश्रा, अपर्णा (2008). लिंग विद्यालय एवं समाज, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
9. सिंह, डी. आर. (2021). किशोरों में शैक्षणिक तनाव और समायोजन के बीच संबंध, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एंड करंट एजुकेशनल रिसर्च, (आईजेएमसीईआर)3(5), 43 46।
10. त्रिपाठी, जय गोपाल (2007), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में शोध पद्धतियां, एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. www.shodhganga.ac.in
2. www.en.wikipedia.in
3. www.researchindia.in

****